

RAGHAB

MORAN

GROUP MEMBERS NAME

3rd Semester

Sumitra Chetia

Chayanika Nath

Anshu Sah

Laxmipriya Dutta

Chitranjan Sonowal

Manashjyoti Buragohain

Monika Halowa

Jita Sonowal

1st Semester

Rima Das

Debashree Bora

Chinmoyee Saikia

Deepjyoti Sonowal

Durga Chettri

Somen Dutta

Deepsikha Hazarika

Kisholoy Tamuly

✓
22.11.2018

Done by:-

Raghab

Moran

Group

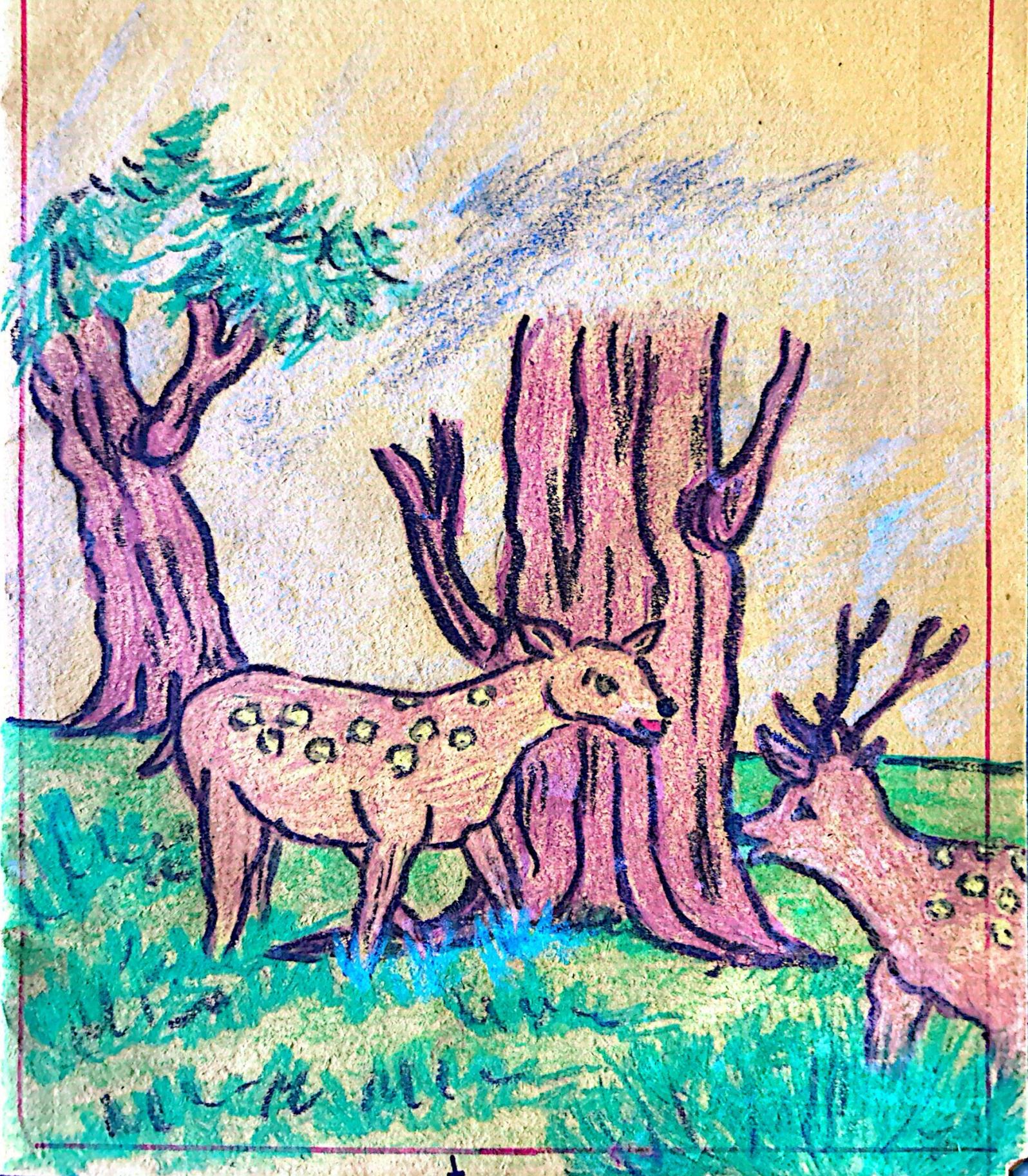


CONTENT

SL. NO	CHAPTER NO.	CHAPTER NAME	PAGE NO.
1	1	THE IMPORTANCE OF EDUCATION	1-5
2	2	শিক্ষাৰ গুৰুত্ব শিক্ষান আৰু পঢ়ুৱা দিয়া কৰুৱা	7-10
3	3	TRUE FRIEND	11-12
4	4	তিন চৌৱ	13-15
5	5	অহুপা অহংকাৰী জ্বালাপ ফুলৰ কাহিনী	16-20
6	6	যাত্ৰিক স্মৰণ	21-24

Lesson - 1.

IMPORTANCE OF EDUCATION



Once there lived a clever and intelligent deer in a jungle. One day, his sister came to him and said, "Brother, please keep your nephew under your guidance and educate him. Train him in such a way that he is able to face any difficult situation in life." So saying the sister left the baby deer with her brother and returned to her house.

The baby deer was now under his uncle's guidance and gaining good education. One day while playing with his friends,

The baby deer went a little deep into the jungle. He was unaware that a hunter had laid the net where he was playing. After some time, the baby deer was trapped in the net. Seeing the deer trapped, his friends rushed to his mother and gave her the bad news. The mother deer ran to her brother and said, "Please go immediately and help my son." The deer assured his sister and said, "Dear sister you need not worry. I have taught him to face such situations. Be patient and keep

faith in God. He will soon come to us unharmed."

On the other hand, the baby deer was thinking of ways to get rid of the net. He was trying to remember what his uncle had taught him. Suddenly, an idea struck him. He lay on the ground pretending to be dead. The hunter came and saw the deer in the net. Taking him to be dead, he removed the net. Now he was busy collecting the wood nearby, so that he could roast the deer

and enjoy his meat. As soon as the baby deer saw the hunter busy in his work he fled from there. He ran as fast as he could and stopped only when he reached home. All were relieved to see him alive. The deer narrated the entire story. The uncle was especially proud, as the deer had proved to be a good student who had made use of his education.

-val tips.

**MORAL - EDUCATION IS THE
KEY SOLUTION TO EVERY PROBLEM
WE FACE IN LIFE.**

ଘୋରାଘୋରା- ମିଥାଳ- ଆଉ ଲାଞ୍ଜା ଦିଆ-କୁକୁର



ବନ୍ଧୁ ବନ୍ଧୁ ଆମେ ଏକ ପାଞ୍ଚାବତ
 ଘୋରାଘୋରା ଆସିଲେ । ଏଦିନ ଘୋରାଘୋରା ହେ ମି
 ଘୋରାଘୋରା ବିଘୋରା ହୁଅନ୍ତି । ପାଞ୍ଚାବତ ଘୋରାଘୋରା
 ବିଘୋରା ନାଆଁ ମି ନାମି ଆମି କିଛିନା
 ଘୋରା ଦେଖିଲେ । ମିହିତେ ତାଲ ଘୋରା ଆସିଲେ
 ମିହି ବନ୍ଧୁ ଅଧିକ ହେ ମିହିଲେ । ମିହିଲେ

গোটেইকোৰ ওড়ণ গৌখি ওখাখিছিল যে সি
যদি এটি ওড়ণ খাব পাৰে হেঁতেন, সি
গাভ বুল পাৰে হম। সি ওড়ণৰ ওবেটল
গৈছিল, ওগত কেইকাটো পৰবা গিম্ব কুকুৰ
আছিল। সিহঁতৰ কাম ওড়ণ খোৱাৰ গৌৰণ।

এনেতে সিম্বাৰে এটি ওড়ণ
কুকুৰ গৌখি গুধিছিল সি কিয় হঁদান
লকত। সিম্বাৰে কুকুৰক আৱাৰ
খাবলৈ কি কাৰিব লগে গুধিলে। কুকুৰে
কৈছিল, যদি ওল আৱাৰ খাব খোজে
ওতিয়া মানুহ এডাল লগত থাকিব
লগিব। সি কৈছিল, সি কোতিয়া ও
মানুহৰ লগত খকা নাই, নিশ্চয় কৰ্ত্ত
কাম কাৰিব লগিব। ওতিয়া কুকুৰে

ମି ଓଡ଼ି ନ'ଇ ।

ନୀତିନିୟମ :- ଓଡ଼ିଶା ପୁନଃ ସଂଗଠନ
ଓଡ଼ିଶା ସରକାରଙ୍କ ଦ୍ଵାରା ନିର୍ଦ୍ଧାରିତ ।

Lesson: 3

TRUE FRIEND

Once upon a time there were three friends - a woodpecker, a tortoise and a deer. They always used to live together by the banks of a lake. One day the hunter came to the lake for hunting. He saw the footprints of the deer. So, he planned to kill the deer. He trapped the deer in the net. When the tortoise and the woodpecker came to know about this, they felt very sad thinking about the deer. They planned to save the deer from the hunter.



As planned by them the woodpecker distracted the hunter and until now, the tortoise had cut the net and the deer was free. Suddenly, the woodpecker saw the hunter coming. He shouted and told them to run away.



The deer and the woodpecker fled but the hunter caught the tortoise. Then the deer planned to distract the hunter and he succeeded to execute his plan and freed the tortoise. In this way, all three of them could run away from the hunter.

MORAL - A FRIEND IN NEED IS A FRIEND INDEED.

तीन चोर पाठ-४

बहुत दिनों की बान हैं, किसी शहर में रमन, घीसा और शका तीन चोर रहते थे, तीनों को थोड़ा-थोड़ा विद्या का ज्ञान था, तीनों चोरों को विद्या का ज्ञान प्राप्त होने के कारण बहुत धमण्ड था, विद्या द्वारा तीनों चोर शहर में बड़े-बड़े लोहे की तिजीरियों को तोड़ देते थे और बैंकों को लूट लिया करते थे, इस तरह तीनों चोरों ने शहर की नाक में रस कर रखा था।



एक बार तीनों चोरों ने एक बड़े बैंक में उकेती करके शरा मान उड़ा दिया, तब पुलिस को खबर हुई तो तीनों चोरों को पकड़ने के लिए तलाश करने लगी, मगर तीनों चोर पास ही के एक घने जंगल में भाग गए।

तीनों चोरों ने देखा कि जंगल में बहुत-सी हड्डियां बिखरी पड़ी हैं, रमन ने अनुमान लगाकर कहा -
"ये तो किसी शेर की हड्डियां हैं, मैं चाहूँ तो सभी हड्डियों को अपनी विद्या के द्वारा जोड़ सकता हूँ,"
धीसा को भी विद्या का धमका था, सो, वह बोला -
"अगर ये शेर की हड्डियां हैं तो मैं इनको अपनी विद्या द्वारा शेर की आंख तैयार कर उसमें डाल सकता हूँ," रमन और धीसा की बात सुनकर शका का भी धमका उमड़ पड़ा और उसने कहा -
"तुम दोनों इतना काम कर सकते हो तो मैं भी अपनी विद्या द्वारा इसमें प्राण डाल सकता हूँ,"

तीनों चोर अपनी विद्या का प्रयोग करने लगे, कुछ देर बाद रमन ने सारी हड्डियों को जोड़ दिया और धीसा ने शेर की हड्डियों को जान डाल दी, थोड़ी देर में तीनों चोर सामने एक जीवित भयानक शेर को देखकर थर-थर कांपने लगे, मगर शेर के पेट में तो एक दाना नहीं था, वह भूख के मारे

गदगता हुआ तीनों चौशों पर हमला कर बैठा और
मास्क श्वा गया, शेर मस्त होकर घने जंगल को
और चल दिया,

शिक्षा:- धमणी को हमेशा दुख का ही सामना
करना पड़ता है,

এজোপা অংকাৰী ছোলাপ ফুলৰ কাহিনী

এখন ফুলনিও বজনিহা নামৰ এজোপা-
ছোলাপ ফুল আছিল। ছোলাপ জোপা নিজক লৈয়ে
অসায়-বুড়। তাইৰ অংকাৰী আছিল। তাইৰ-
অসায় ফুলীয়া আৰু কোলা নাই। এই ভেবে-
তাই অসায়। উৰায়া-সো-আমি আহি দেখিয়া
তাইৰ কাহিনী পৰে তেতিয়া বজনিহাৰ অং-
কাৰ আৰু বঢ়ি যায়।

এদিন বাগিচাত ফুলৰ সৌন্দৰ্য প্ৰতিযোগিতা
আৰম্ভ হ'ল। এই প্ৰতিযোগিতাৰ পৰীক্ষক
আছিল বজনিহা ফুল এজোপা। তাইও ফুলী
আছিল। তাই-অসায়ৰ পৰা বাগিচাৰ ফুলৰ
চাই-অংকাৰী-বজনিহা নামৰ ছোলাপ
জোপাক বাগিচাৰ সৌন্দৰ্যী ফুলী বুলি
ধোমগা কৰিলে। আনহও বজনিহাই চাহমেনৰ
আয়োজন কৰিলে। সেইদিন খৰি বজনিহাক
পায় কোলে, অংকাৰীও অহুওন অও হৈ তাইৰ
লগৰীয়া অকলক বেয়া কৰিব কৰিবলৈ ল'লে।

ଏନିମାମନ ଚିକାମ ଓଢ଼ ଅପି ନାମବ ହୃଦପଠସ୍ତ
 ଆହି ଡୋମାପଞ୍ଜୋପାକ୍ ନାହିଠେ ନାବି ଡୋକ
 ନବିଲେ ଆବସ୍ତ କାବିହୁ ମାତ୍ରୋମ ଏକ୍ଷତେ-ମିହିଠେ
 କରୁକା ମାଠ ଓନିବିଲେ ମାତ୍ରୋମ । ଡୋମାପ-ଞ୍ଜୋପାହି
 ମିହିଠକ କଲେ " ଠହିଠେ ଝଘାଠ ଡିବାବ ଡୋବଠିନି
 ଏହିମନ ମୋବ ବିହୁନା " । ଡେଠିକା ନମ୍ରଡ଼ାରେ
 ଅପିୟେ କଲେ, " ବାହିଲେ ଭେନପ ଠାନ୍ତା ଏହି-
 ଠାହିଠେ- ଡିବାବନି ନିୟକ । ଓଢ଼ିକା ଭେନପ ଲିହୁ
 ଯାମାମା " । କିନ୍ତୁ ବଞ୍ଜାମିହାହି କରୁକା ମାତ୍ରୋବେ-
 କଲେ ମେ ଝଘାବ ମାତ୍ରା ଡୋକ୍ ଡୋକ୍ ନଗାଲେ
 କମା ବେମା ବୁଧି । ଡାହିବ କମା ଓନି ଓଠବଠେ
 ମକା ଲେକାହି ଡୋମାବ ବେମା ନାଗିଲ । ମିହିଠକ
 ଓଠବଲେ ମାତ୍ରା ପାଠିହାଲେ । ଡେଠିକା ମିହିଠେ-ଠହି
 ଓଠବଠେ ବିଭ୍ରାମ ନଲେ । କିନ୍ତୁ ଅମୟବ ମିହିଠେହି
 ମେହିନିମାହି ଓନ ଏଟେ ମାମିନା ଆହି ଡୋମାପ-
 ଡୋମାବ ଓପବଠେ ମାବିନାହି । ଏହିବାବ ବଞ୍ଜାମିହା
 ମଃ ହଠୁଲେ ଠାଡ଼ିଲ । ବାବେ ବାବେ- ଓଢ଼ାନିନିହା
 ଠାବେ । କିନ୍ତୁ ଡାହି କାନ୍ତି ବିଗାରେ ଓଢ଼ ଉକନ-
 -କାବେ ମାକିବଲେ ବିଚାବେ । ନିବମାମ ହି ମାମିନା
 ଡୋକ୍ ଓନ ଏଜୋମା ହୁଲଠେ ମାବି ମୋ-ହୁହି
 ଡାହିବ ମେଠେ ବନ୍ଧୁକ୍ ମାତ୍ରୋଲେ । ଏଲେ ଅମୟାଠ

আম এটা পানিলা আহি পূৰ্ব জোলাপু জোপাব-
 ওপৰত পৰাও- অঙতে ওহঁ মো- মাৰটোকো-
 অকম্য- তোমাবে- গানি- সপনি- পাৰি- ক'লে
 "তোৰ- ইমান- আহু- নে- মোৰ- পাৰিও- পাৰি- মো
 পাৰিলে- আহিছ- " ।



জোলাপ- জোপাব- কৰখাৰও- ফুলসিৰ-
 এটায়ে- স্কু- হ'ল- । ইয়াৰ- অতিবাহত- এটাত্তে
 স্মি- এপন- বাত- অহা- অহা- এফান- অহিলে- ।
 স্মী- স্মী- স্মাপ- মেই- অহাৰ- অহা- স্মী
 নি- বাচি- হ'ল- । ওহঁ- বৰ- অহা- এফান- । অহা-
 এফা- অহা- স্মী- অহা- স্মী- স্মী-
 ক'লে- " মোৰ- এফা- ইয়া- স্মী- স্মী-
 স্মী- । " স্মী- এফা- এফা- কমা-
 স্মী- দিলে- এফা- এফা- স্মী-

কবীর অভিযুক্তি দিলে । কিন্তু একদিন
 তেঁওর মতে আসি হইল । সেহে নিউ-
 পায় হি গাছের সোও আটাই যে অমুখ্য
 মোরফু করিলে আক কোলেও গাছের
 নিমিত্ত হইল । তেঁওর গাছ কেহো
 অকসমসময় হি পাবিল । কিছুদিন
 একলে গাছ মন মাঝি মকা দেখা গেল ।
 গাছের তলে অমুখ্যও কিছুমান লোক-দেখাই
 গাছের মূঠে বুলি আছড়ি ঠাঠিহি ।
 বজানিছাই হেই লোক-পল্লী বাবোব-উল্লাহ
 অমুখ্য করিব মোরাবি-আবিলে যে হেই
 মাঝেই গাছের পবাজয় হুম । গাছের
 আক একে কাম নিদিলে । তলে অমুখ্য
 গাছ বুনীয়া হি মাঝিলে কি লাও
 চিন্তা করিলে ।

কিছুদিন পিছুও-তেই মো-মাঝি
 বজানিছাই-ওচরিলে অমুখ্য বিষয় মনে
 গাছ নিজের-দুসর কাম-কালে
 গাছের-আছড়ি বাবে কাম মুক্তি
 মনে লাগেই সেই মো-মাঝি

শহীদ- বঙালিছাৰ- দুখন- কথা- ক'লেগৈ।
শ্ৰীমতী শহীদ- বুজালে যে গেৰাণ্ডে- দিয়া- অ-
মৌলৰ্ম, বুদ্ধি- আৰু- অস্বাভাৱ- কাকো- সুখ-
কৰিব- নোৱাৰে, যদি- অশ্ৰু- আৰু- আন- সুখ-
আৰু- আন- বাবে- কৰা- হ'ল- (অতি-
অনু- সুখ- আছে। আন- লগ- বহু- মৰম-
আৰু- অনু- নাবলি- আন- আন- মৰম-
বিলাক- লিগি-। অং- মা- কো-
দ্বাৰ্শ- দ্বৈ- নাপা-। বঙালিছাৰ- এই-
কথা- অসং- কৰিলে- আৰু- নিজ-
কৰা- বাবে- অনু- হ'ল।

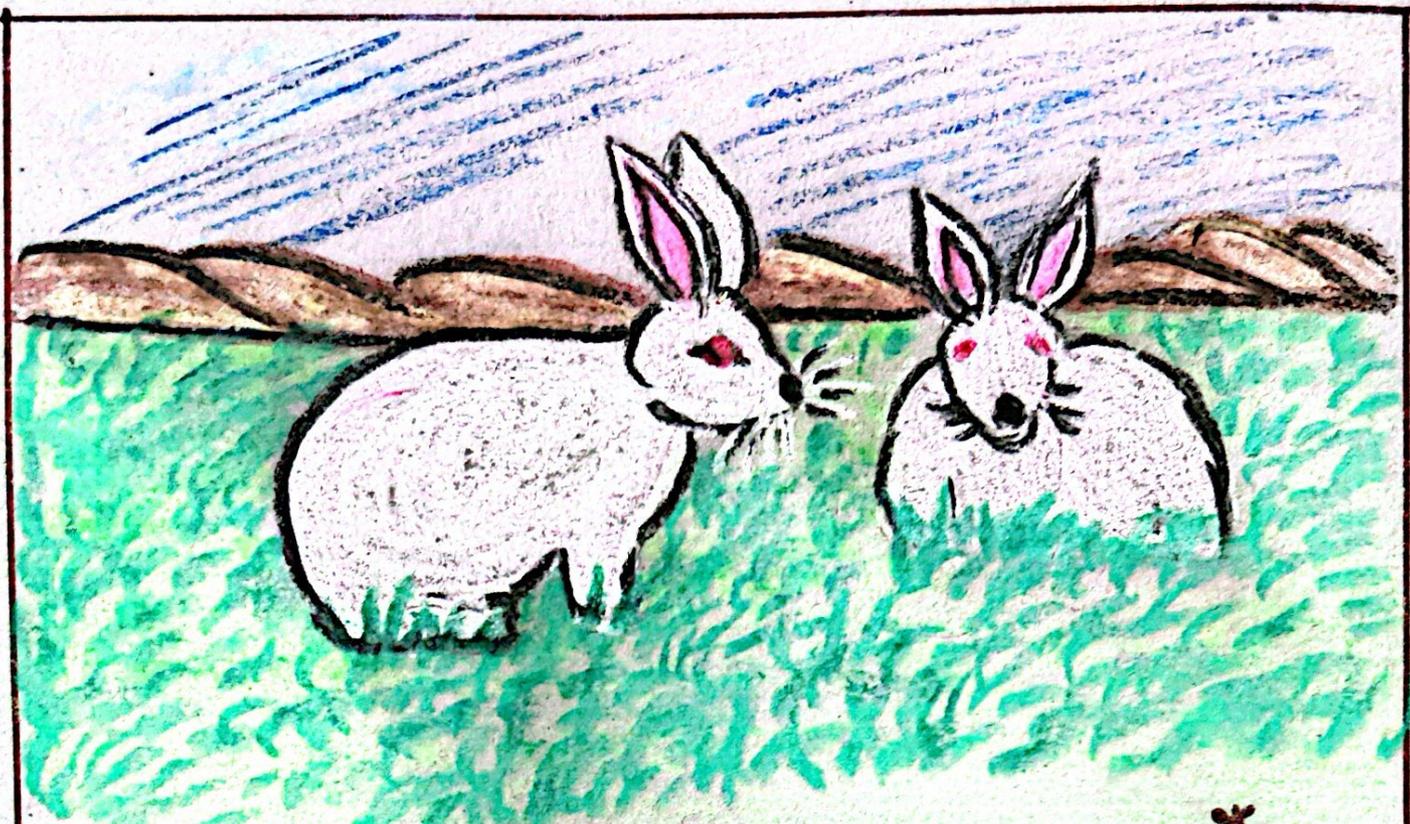
নীতিশিক্ষা :

→ "অহং- কাৰেই- পৱন- সুখ।"

→ "অহং- কাৰে- বিপদ- লগ-
সুখ- কৰে।"

चालाक खरगोश

एक बार एक चीकू नाम का खरगोश था। एक दिन वह अपनी पत्नी के साथ बाग में घूम रहा था जब उसकी पत्नी ने पेड़ पर मीठे-मीठे फल लटकें देखे तो उसके मुँह में पानी आ गया। उसने चीकू से फल तोड़कर लाने को कहा। इस पर चीकू ने कहा कि यह बाग एक भैंसियों का है जो बहुत ही खूंखार है। अगर उसे पता चला गया कि हमने फल तोड़े हैं तो वह हम दोनों को मार कर खाए चारेंगा। परन्तु चीकू की पत्नी उसके समझाने पर भी ना मानी। हारकर चीकू को फल तोड़ने जामा पड़ा। चीकू ने जैसे ही फल तोड़ने शुरू करे, वहाँ भैंसिया आ गया। चीकू फौरन फल लेकर भगा और पास



पड़े रूक रूम में घूस गया और
उस रूम में फल रखकर बाहर आकर
चुपचाप खड़ा हो गया। तभी भेंड़िया
वहाँ आ गया और उसने चीकू से पूछा
कि क्या उसने किसी खरगोश को वहाँ से
फल ले जाने दृष्ट देखा है। चीकू फौरन
समझ गया कि भेंड़िये ने उसे पहचाना
नहीं। उसने भेंड़िये से कहा कि - अभी

- अभी एक खरगोश को मैंने इस ड्रम में घुसते हुए देखा है। उसके पास बहुत से फल थे।

भेड़िया ड्रम के पास गया तो उसे उसमें से फलों की खुशबू आ रही थी। भेड़िया खरगोश को मारने के लिए उस ड्रम में घुस गया। चालाक चीकू के फटाफट ड्रम का ढकन बंद कर दिया। भेड़िया ड्रम के अन्दर ही मर गया। चीकू और उसकी पत्नी उस बाग के मालिक बन गए। इस तरह चीकू ने अपनी बुद्धि से न सिर्फ अपनी

जान बचायी बल्कि उस बाग का
मालिक भी बन गया।

नीतिशिक्षा :- विपत्ति में यदि निर्भीक
व बुद्धि से काम लिया जाये तो उससे
सहज ही मुक्ति पाई जा सकती
है।

✓
22.11.2018